19-2-68 रात्रिक्लास ओमशान्ति

यह गीतों आद की महिमा भक्ति में गाई जाती है। ज्ञान में शुन हो जाते। आत्मा जाये बाकी रहती है। जो कुछ भक्ति में किया जाता है वह ज्ञान में नहीं। भाई-बहिन बन बाप से ज्ञान ले फिर अकेलानिल में चला जाना है। वाणी से परे। उसमें कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती। निर्वाण, बानप्रस्त में जाना है। शान्ति में विचार सागर मथन करना, उन में आवाज़ की कोई बात नहीं। गुप्त सब कुछ। यह गायन आ हिरस अजन बच्चों में है। शिव की महिमा गाना जैसे भक्ति हो जाती। यहां तो शरीर का भन भी छोड़ना है। सिर्फ आत्मा को बाप को याद करना है। आत्मा शरीर का मालिक है। अभी हम वाणी से परे जावें। यह गीत आद भी वाणी है ना। इन से भी दूर जाना है। परन्तु इसमें टाईम लगता है। मनुष्य शान्ति मांगते हैं ना। तुम कहेंगे हमारा स्वधर्म ही शान्त है। घर जाना है? जैसे बाप रचता है रचना के आदिमध्य अन्त को जानते हैं तो हम भी बाप द्वारा जानते हैं। जो न जानते हैं गोया नास्तिक है। तो बाप कहते हैं धंधा आद करते आन्तरीक हो स्वधर्म में रहो। बाप भी शान्त में आते हैं। बच्चों को शान्ति में ले जाते हैं। तुम तैयारी करते हो स्वधर्म में जाने की। अभी समझना पड़ता है। फिर तो प्रारब्ध में जावेंगे। वहां ज्ञान नहीं। पद मिल गया खत्म। बाकी अभी यह मेहनत है। बानप्रस्त वा मुक्ति एक ही है। जीवनमुक्ति अलग है। तो ऐसे2 करते हम आत्मा परमात्मा का बाप को ही याद करते रहेंगे। आत्माएं सब है पार्टधारी। पाट पूरा होता है तो आत्माएं जाकर परमात्मा से मिलेंगी। पुरुषार्थ ही करते है मुक्ति के लिए। घर जरूर जाना पड़े सब को समझाना है। शान्तिधाम, सुखधाम, दुःखधाम। अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं निर्वाणा धाम जाने लिए फिर जीवनमुक्ति में आना है। यह तो गीत आद बेहद के बाप पसन्द नहीं करते हैं। तो इनको भी पसन्द नहीं आती। बाप कहते हैं हमारे मिशल बानप्रस्ती बने। यह भी बानप्रस्ती बनने पुरुषार्थ करते हैं। बाप कहते हैं बानप्रस्ती बनो। नंगे आये थे नंगे ही जाना है। अभी शरीर साथ है। बाप को आना पड़ता है सब को आप समान बनाने लिए। आवाज़ से भी परे जाना है। प्रैक्टीस भी करनी है। बाप कहते हैं गृहस्थीव्यवहार में रहते मुझे याद करो। बाप का धंधा ही है सब को निर्वाण धाम ले जाने का। तुम समझते हो हम जावेंगे जरूर। इसलिए बाबा को डायलॉग, ड्रामा आद कुछ भी अच्छी नहीं लगती। हमको तो जाना है ?। बाबा योग रखने से हम पावन बन जावेंगे। शान्ति के लिए ही सब पुरुषार्थ करते हैं। निर्वाण में शान्ति फिर रामराज्य स्थापन होते हैं वहां भी शान्ति भी है। तिक2 को सुनकर मनुष्य जाते हैं धारणा कुछ भी नहीं होती है। बातें ही थोड़ी बतानी चाहिए। यह दुःखधाम, वह सुखधाम। वह शान्तिधाम। तुम क जाते हो? बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसलिए गाया भी जाता है मुक्ति और जीवनमुक्ति। समझाना ही अल्प और बे बादशाही। चक्र तो फिरता ही रहता है। तुम ब्राह्मणों की आयु बहुत छोटी है। आज ब्राह्मण बने हो कल देवता बन जावेंगे। तुम बच्चों को अपने स्वधर्म में टिकना है तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। मनुष्य कितना भटकते हैं मले मलाखड़े में। कितने मेले लगते हैं। तुम कितना शान्ति में रहते हो। सिर्फ सर्विस करने लिए माथा मारना पड़ता है। जितना2 शरीर के भान से छूटते जावेंगे फिर खुशी का पारा चढ़ता जावेगा। इस दुनिया से दिल नहीं लगेगी। तुम बच्चों को तैयार हो रहना है। उठते, बैठते अन्दर जैसे कि नफरत है। हम पुरानी दुनिया से जाते हैं अपन नई दुनिया राजधानी में। अहम विश्व की राजधानी अपने लिए स्थापन कर रहे हैं। कितना नशा रहना चाहिए। हरेक अपने नशे को समझे। मालूम पड़ता है सर्विस से। यह भी समझा सकते हो पतित पावन आये हैं अपने घर ले जाने। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जावेंगे। फिर तुम हमारे साथ चलेंगे। कहते हैं इसका शरीर से ममत्व मिटा दो। बच्चे सर्विस करते हैं तो बाप की दिल खुश होती है। टोली बना कर भेज देवें। बच्चे मेहनत करते हैं तो दिल होती है बच्चों को टोली खिलाने। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।

डायरेक्शन:-

****** त्रिमूर्ति शिव के स्टैम्पस बाप ने बनवाई है कोई बड़े2 आदमी, मिनिस्टर आद वा राजाओं के कोलिटरेचर वा लेटर आद भेजना हो यह ऊपर में लगा कर भेज सकते हैं। जिनको चाहिए तो मधुबन वा बई से मंगा सकते हैं।